कोविड ..19 का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव का आर्थिक एवं भौगोलिक अध्ययन

Pappu Lal Kumawat

Assistant Professor Geography
Govt. Girls College Bassi, Chittorgarh.

सार–

शोध समस्या का चयन हम इस तथ्य को नजर अंदाज नही कर सकते है कि चीन और दुनिया के अन्य देशों में कोविड–19 के प्रकोप से वैश्विक स्तर पर आर्थिक मंदी,व्यापार की आयात–निर्यात नीति, वस्तुओं और उत्पादन में कमी से अर्थव्यवस्था पर महत्वपूर्ण प्रभाव पडने की उम्मीद है । आयात में चीन पर भारत की निर्भरता बहुत बडी है 20 उत्पादों में से जो भारत दुनिया से आयात करता है, उसमें चीन एक महत्पूर्ण हिस्सेदारी रखता है भारत का कुल इलेक्ट्रानिक आयात यानी लगभग 45 प्रतिशत चीन पर निर्भर लगभग एक तिहाई मशीनरी और लगभग कार्बनिक रसायन जिन्हे भारत खरीदता है चीन से आते है मोटर वाहन और उर्वरकों के लिए भारत के आयात में चीन की हिस्सेदारी 25 प्रतिशत से अधिक है। लगभग 65 से 70 प्रतिशत सक्रिय फार्मास्ययुटिकल सामग्री और लगभग 90 प्रतिशत मोबाईल फोन चीन से आते है। इसलिए हम कह सकते है कि चीन में कोरोना वायरस के प्रकोप के कारण, चीन पर आयात निर्भरता का भारतीय उद्योग पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड सकता है परन्तु अब चीन मे हालात सुधर रहे है तो हो सकता है कि आने वाले समय में कुछ बदलाव देखने को मिले निर्यात मामले में चीन भारत का तीसरा सबसे बडा निर्यात साझेदार है और लगभग 5 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है इसका असर निम्नलिखित क्षेत्रों मं भी हो सकता है जैसे कि जैविक रसायन,प्लास्टिक मछली उत्पाद,कपास इत्यादि । हम यह भी अनदेखा नहीं कर सकते है कि अधिकांश भारतीय कंपनिया चीन के पूर्वी भाग में स्थित है चीन में भारत की लगभग 72 प्रतिशत कंपनियॉ शंघाई,बीजिंग,ग्वांगदोग,जियाग्स और शानदोंग जैसे प्रांतों में स्थित है विभिन्न क्षेत्रों में ये कम्पनियां औद्योगिंक निर्माण विनिर्माण सेवाओं आईटी और बीपीओ, लॉजिस्टिक्स, रसायन, एयरलाइंस और पर्यटन सहित काम करती है अब वहा पर कोविड–19 को लेकर हालात सुधर रहे है और चीन फिर से ट्रेक पर आ रहा है कुछ विशेषज्ञों अर्थशात्रियों और नीति निर्माताओं के अनुसार ये कुछ प्रभाव हो सकते हैः–

प्रस्तावना

भारतीय अर्थव्यवस्था की वर्तमान स्थिति पर नजर डाले तो पता लगता है कि भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की तीसरी सबसे बडी अर्थव्यवस्था है। क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में सातवें स्थान पर है, जनसंख्या में इसका दूसरा स्थान है और केवल 2.4 प्रतिशत क्षेत्रफल के साथ भारत विश्व की जनसंख्या के 17 प्रतिशत भाग को शरण प्रदान करता है। 1991 से भारत में बहुत तेज आर्थिक प्रगति हुई है जबसे उदारीकरण और आर्थिक सुधार की नीति लागू कीगयी है और भारत विश्व की एक आर्थिक महाशक्ति के रूप में उभरकर आया है सुधारों से पूर्व मुख्य रूप में भारतीय उद्योगों और व्यापार पर सहकारी नियंत्रण का बोलबाला था और सुधार लागू करने से पूर्व इसका जोरदार विरोध भी हुआ परन्तु आर्थिक सुधारों के अच्छेपरिणाम सामने आने से विरोध काफी हद तक कम हुआ है । और एक बडा हिस्सा इन सुधारों से अभी भी लाभान्वित नही हुये है।

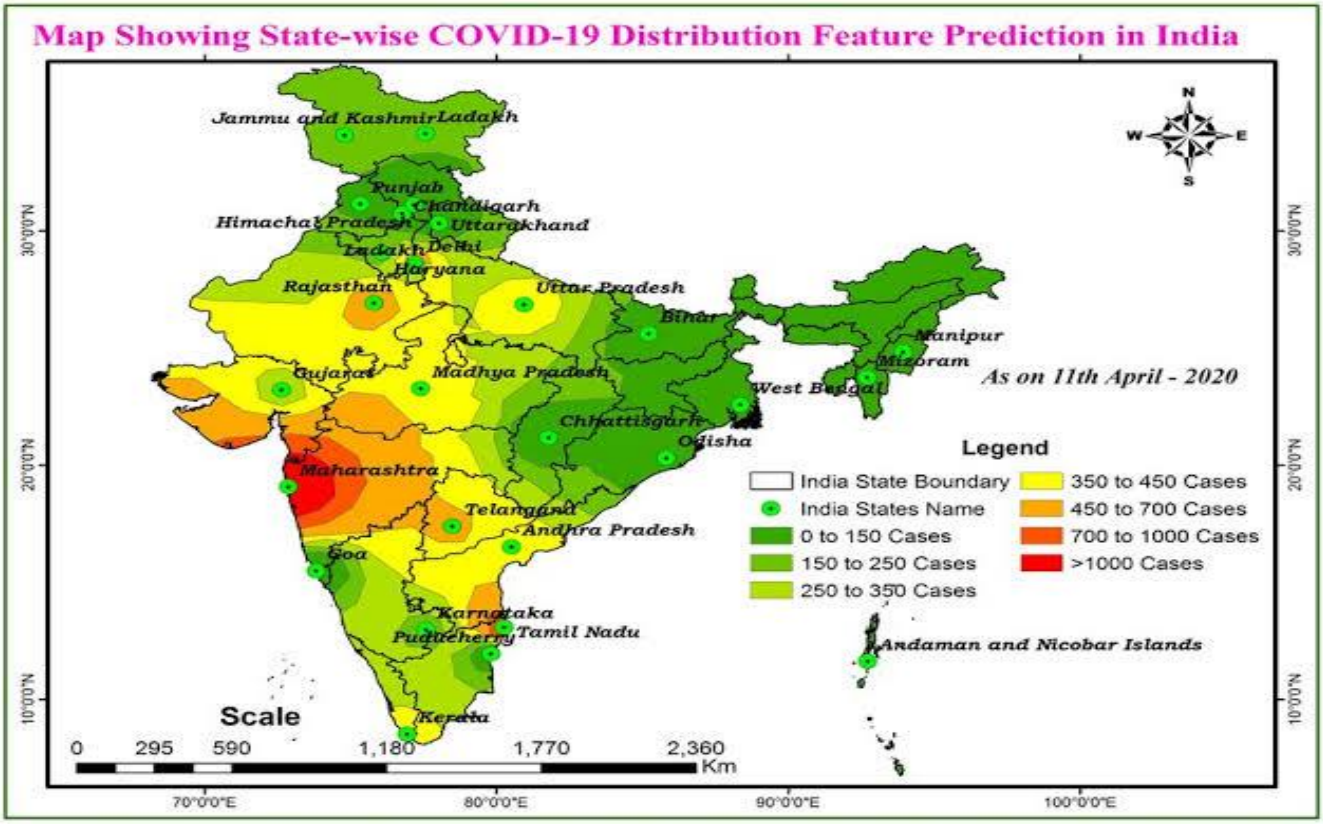

लॉकडाउन के कारण आर्थिक गतिविधि का नुकसानः–

- लोगों को नौकरी खोने के कारण आय का नुकसान
- वैश्विक बंद के कारण निर्यात में गिरावट
- कई क्षेत्रों में उत्पादन में व्यवधान

नवीनतम अर्थव्यवस्था के पूर्वानुमान के अनुसार, मंदी की स्थिति में आने वाले देशों और दिवालिया होने वाली कंपनियों में प्रवेश करने की संभावना बढ गई है। अरूण सिंह, मुख्य अर्थशास्त्री डन और ब्रैडस्ट्री इंडिया ने कहा चीन के अलावा अन्य वैश्रिवक विनिर्माण केन्द्रो में भी तालेबंदी की जा रही है जिससे वैश्रिवक आपूर्ति श्रृखला और वैश्रिवक विकास में कमजोरी बढ सकती है।

भारत की आर्थिक वृद्धि पर सिंह ने कहा भारत के 21 दिनों के लॉकडाउन को देखते हुए भारत की जीडी.पी. वृद्धि हमारे फाईनेनशियल ईयर 20 के लिए 5 प्रतिशत के पहले के अनुमान से आगे मध्यम रहने की उम्मीद है। वाणिज्यिक गतिविधियों पर तालाबन्दी और प्रतिबन्ध से वैश्रिवक कीमत में तेज गिरावट और अन्य प्रमुख वस्तुओं जैसे ऊर्जा, धातुओं और उर्वरकों में कीमत घट जाएगी और मुद्रास्फीति पर दबाव बढने की उम्मीद है।

कोविड–19 का विश्लेषणात्मक अध्ययन

- **कोरोना वायरस के कारण भारत में पैदा हुई आर्थिक चुनौतियां** अर्थव्यवस्था पर इन स्थितियों का कितना गहरा असर पडेगा ये दो बातों पर निर्भर करेगा एक तो ये कि आने वाले वक्त में कोरोना वायरस की समस्या भारत में कितनी गंभीर होती है और दूसरा कि कब तक इस पर काबू पाया जाता है । कोराना वायरस ने न केवल भारत की बल्कि अर्थव्यवस्था की हालत खराब कर रखी है विश्व बैक की ताजा रिपोर्ट के मुताबिक कोरोना वायरस के कारण भारत की इकोनॉमी पर बडा असर पडने वाला है कोरोना से भारत की आर्थिक बृद्धि दर में भारी गिरावट आएगी। वर्ल्ड बैंक के अनुमान के मुताबिक वित्तीय वर्ष 2019–20 में भारतीय अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर घटकर मात्र 5 प्रतिशत रह जाएगी तो वही 2020–21 में तुलनात्मक आधार पर अर्थव्यवस्था की वृद्धि दर में भारी गिरावट आएगी जो घटकर मात्र 2.8 प्रतिशत रह जाएगी रिपोर्ट में कहा गया हे कि यह महामारी ऐसे समय में आई है जबकि वित्तीय क्षेत्र पर दबाव के कारण पहले से ही भारतीय इकोनॉमी सुस्ती की मार झेल रही थी कोरोना वायरस के कारण इस पर और दबाव बढा है । जिस बात का डर था वही होने जा रहा है। कोरोना पर नियंत्रण के उद्देश्य से 25 मार्च 2020 को देश में लॉकडाउन शुरू हुआ तो कोरोना संक्रमित मरीजों की संख्या 500 थी। बीस दिनों में यह संख्या बढकर दस हजार तक पहुॅच गई। और अब हालात ये है कि देश में एक दिन के भीतर 40 हजार मरीज सामने आ गए। विशेषज्ञों का मानना है कि देश में महामारी के सामुदायिक, संक्रमण की शुरूआत होने की

आशंका से इन्कार नहीं किया जा सकता। अगर ऐसा हो रहा है तो इसके कारणों पर भी जाना होगा और इसके समाधान पर भी। यह तथ्य किसी से छिपा नही कि 500 मरीज सामने आने पर केन्द्र सरकार ने लॉकडाउन की घोषणा की तो उसकी मंशा बीमारी के सामुदायिक संक्रमण को रोकने की थी । शुरूआती दौर में राज्य सरकारें भी सतर्क रही और जनता भी देश में 68 दिन लॉकडाउन चला तो हालात नियंत्रण में नजर आए किन्तु जैसे ही लॉकडाउन खुला सरकारें भी बेफ्रिक हो गई व जनता भी। मध्य प्रदेश में चला राजनीतिक नाटक सबके सामने है। राजस्थान मे इन दिनो जो हो रहा है किसी से छिपा नहीं है । बीते 10 दिनो से राज्य सरकार होटल में बंद है। मरीजों की संख्या अप्रत्याशित रूप से बढ रही है पर सरकार व तमाम राजनीतक दल जनता की चिंता छोडकर राजनीतिक राजनीति खेल रहे है। ऐसे में कोरोना को बेकाबू होने से भला कौन रोक सकता है। बीते 15 दिनों के हालात का विश्लेषण करें तो लगता नही कि राज्य सरकारें कोरोना को लेकर गंभीर रही है। ऐसा लगता है जनता को उसके हाल पर छोड दिया गया है। उत्तर प्रदेश बिहार और पश्चिम बंगाल में लॉकडाउन फिर शुरू किया गया है लेकिन गंभीरता कही भी नजर नही आ रही। न प्रशासन की सख्ती है और न सतर्कता। देश आज जबरदस्त संकट के दौर से गुजर रहा है इसे गंभीरता के साथ ही लेने की जरूरत है। सवाल यह उठता है कि राजनीतिक टकराव को क्या इस समय टाला नहीं जाना चाहिए? राजनीतिक दलो को क्या मिलकर इस कोरोना महामारी से लडना नहीं चाहिए? हालात अभी बिगडे जरूर है लेकिन इस बात में कोई संदेह नहीं है कि सामूहिक प्रयास किये जाएं तो बडे खतरे को टाला जा सकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भारत को लेकर गई तरह की आशंकाएँ जता चुका है। लेकिन हम उसे गंभीरता से नहीं ले रहे है। यही हाल रहा तो कोई आश्चर्य नही कि कोरोना मरीजो के मामले में हम अमरीका को भी पीछे छोड दे। जरा सोचिए उस स्थिति में देश का क्या होगा। अर्थव्यवस्था पहले ही चौपट हो चुकी है। मरीजों की तादाद इसी तरह बढती रही तो स्थिति नियंत्रण के बाहर होते देर नहीं लगेगी अब भी समय है जब हम खतरें को पहचाने और नए सिरें से कोरोना विरूद्ध रणनीति बनाए और सावधानी पूर्वक इसे किस तरह लागू किया जाए कि संक्रमण चक्र भी टूटे और आर्थिक बर्बादी भी कम हो। दर असल कोरोना वायरस के कारण देशभर में लॉकडाउन है सभी फैक्ट्री आफिस,माल्स व्यवसाय आदि सब बंद रहे है। घरेलू आपूर्ति और मॉग प्रभावित होने के चले आर्थिक वृद्धि दर प्रभावित हुई है वही जोखिम बढने से घरेलू निवेश में सुधार में भी देरी होने की संभावना दिख रही है ऐसे में अर्थव्यवस्था मुश्किल दौर में पहुॅच सकती है। रिपोर्ट में सरकार को वित्तीय और मौद्रिक नीति के समर्थन की जरूरत पर जोर देने की सलाह दी गई चुनौती से निपटने के लिए भारत को इस महामारी को फैलने से रोकने के लिए जल्द से जल्द ज्यादा प्रभावी कदम उठाना होगा। साथ ही स्थानीय स्तर पर अस्थायी रोजगार सृजन कार्यक्रमों पर भी ध्यान देना होगा। इंटरनेशनल लेबर ऑर्गनाइजेशन ने कहा था कि कोरोना वायरस सिर्फ एक वैश्विक स्वास्थ्य संकट नही रहा बल्कि ये एक बडा लेबर मार्केट और आर्थिक संकट भी बन गया है जो लोगों को बडे पैमान पर प्रभावित करेगा।

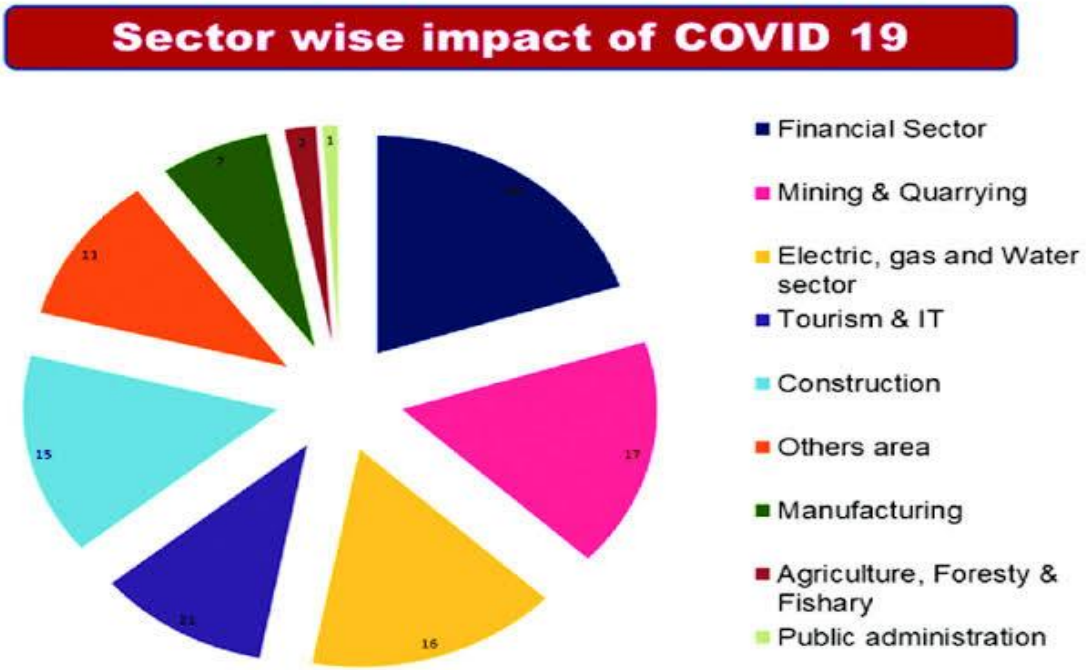

वैश्विक जी.डी.पी. में रोज कमी दर्ज की जा रही है लाखो लोग अपना रोजगार खो चुके है। आईएलओ के अनुसार कोरोना वायरस की वजह से देश ढाई करोड नौकरिया खतरे में है कोविड–19 के कारण चीन से होने वाले आयात

के प्रभावित होने से स्थानीय और बाहरी आपूर्ति में चिताएँ बढी है। सरकार द्वारा कावेडि–19 के प्रसार को रोकने के लिये लॉकडाउन और सोशल डिसटेंसिंग जैसे प्रयासों से औद्योगिक उत्पादन प्रभावित हुआ है। लॉकडाउन के कारण बेरोजगारी बढी है जिससे सार्वजनिक खर्च में भारी कटौती हुई है। लॉकडाउन के कारण कच्चेमाल की उपलब्धता उत्पादन और तैयार उत्पादों के वितरण की श्रृंखला प्रभावित हुई है। जिसे पुनः प्रारम्भ करने में कुछ समय लग सकता है। उदाहरण के लिये उत्पादन स्थगित होने के कारण मजदूरों का पलायन बढा है ऐसे में कंपनियों के लिये पुनः कुशल मजदूरों की नियुक्ति कर पाना एवं पूरी क्षमता के साथ उत्पादन शुरू करना एक बडी चुनौती होगी। जिसका प्रभाव अर्थव्यवस्था की धीमी प्रगति के रूप में देखा जा सकता है। खनन और उत्पादन जैसे अन्य प्राथमिक या द्वितीयक क्षेत्रों में गिरावट का प्रभाव सेवा क्षेत्र कंपनियों पर भी पडा है। विश्व बैक के मुख्य अर्थशास्त्री हैंसटिमर ने कहा कि भारत का परिदृश्य अच्छा नहीं है टिमर ने कहा कि यदि भारत मे लॉकडाउन अधिक समय तक जारी रहता है तो यहा आर्थिक परिणाम विश्व बैंक के अनुमार से अधिक बुरे हो सकते है। उन्होने कहा कि इस चुनौती से निपटने के लिये भारत को सबसे पहले इस महामारी को फैलने से रोकना होगा और साथ ही यह भी सुनिश्चित करना होगा कि सभी को भोजन मिल सकें। लॉकडाउन का सबसे ज्यादा असर अनौपचारिक क्षेत्र पर पडेगा हमारी अर्थव्यवस्था का 50 प्रतिशत जी.डी.पीअनौपचारिक क्षेत्र से ही आता है। कोरोनाकाल में ज्यादातर कंपनियों की आमदनी में गिरावट दर्ज हुई है हालाकि कुछ कम्पनियॉ ऐसी भी है जिन्होने इस दौर में भी जमकर मुनाफा कमाया है देश को उन 20 कंपनियों की सूची तैयार की हे जिन्होने 25 मार्च से 30 जून के बीच अपने मार्केट कैपिटन में 10 हजार करोड या इससे अधिक का इजाफा किया है। इस सूची में उम्मीद के अनुरूप फार्मास्युटकल कंपनियॉ तो है ही लेकिन इसके अतिरिक्त ऑटोमोबाइल, बैकिंग, मेटल, माइनिंग, टेलीकॉम और डायर्व बिजनेस वाली कंपनिया भी शामिल है। भारत को चाहिए कि अर्थव्यस्था को संभालने के लिए भारत में भी प्रतिभाशाली अर्थशास्त्रियों की एक कमेटी का गठन किया जाए।

आइए जानते है कि ये 20 कम्पनिया कौर सी है जिन्होन इस संकट के दौर में अच्छे फंडामेटल और बेहतर निर्णयों ने दी इन कम्पनियों को बढत :–

- **रिलायंस इंडस्ट्रीज**– 3,94,374 करोड जोडे अपने मार्केट कैप में इस कंपनी की खास बात यह है कि कंपनी ने अपने जियो प्लेटफार्म्स की हिस्सेदारी बेचकर तीन महाने में 1.8 लाख करोड रूपए जूटाए है 12 लाख करोड से अधिक मार्केट कैप वाला देश की पहली कंपनी है।
- **सनफार्मा–** 30,960 करोड करोड रूप्ए अपने मार्केट कैप में जोडे इस कंपनी की खास बात यह है कि फार्मास्युटिकल फॉमूलेशन में कंपनी दुनिया की दिग्गज कंपनियों को बराबर की टक्कर देती है। वित वर्ष 2019–2020 में कंपनी का नेट प्रॉफिट अनुमान से 35 प्रतिशत ज्यादा रहा।
- **महिन्द्रा एण्ड महिन्द्रा**–28,960 करोड रूपए अपने मार्केट कैम्प में जोड इस कंपनी की खास बात यह है कि इस साल के जून महीने से कंपनी ने पिछले साल के जून महीने से ज्यादा ट्रेक्टर बेच डाले।
- **ब्रिटानिया**– 27,722 करोड रूपए मार्केट कैप इस कंपनी की खास बात यह है कि यह कंपनी देश की सबसे बडी बिस्किट निर्माता पारले का साल दर साल मार्केट शेयर छीन रही है।
- **बंधन बैक**– 26,505 करोड अपने मार्केट कैप में जोडे इस कंपनी की खास बात यह है कि पिछले तीन महीने में 106 फीसदी का रिटर्न। मार्केट कैप 106 फीसदी बढा।
- **अरबिंदो फार्मा–** 25,664 करोड रूपए जोड मार्केट कैप में इस कम्पनी की खास बात यह है कि इस कम्पनी के शेयरों ने दो महीने में 13.1 प्रतिशत का रिटर्न दिया है एपीआई की बडी उत्पादक।
- **बजाज ऑटों**– 25,503 करोड रूपए जोडे मार्केट कैप में। इस कम्पनी की खास बात यह है कि यह देश की दूसरी सबसे बडी दोपहिया निर्माता है वित वर्ष 2019–20 में इसका राजस्व 31443.22 करोड रूप्ए और मुनाफा 4,890.40 करोड रूप्ए रहा।
- **मारूती सुजुकी** – 24,314 करोड रूप्ए जोडे मार्केट कैप में। इस कम्पनी की खास बात यह है कि मारूती कम्पनी भारतीयों की नब्ज समझती है देश में बिकने वाली दो में से एक कार मारूती की होती है। 2019–20 में पॅसेजन व्हीकल सेगमैंट में 51.03 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ शीर्ष स्थान पर बनी रही।
- **सिप्ला–** 21,233 करोउ रूपए जो मार्केट कैप में इस कम्पनी की बात यह है कि सिपला कम्पनी की बनी दवाईयो की बदोलत ही अफ्रीका एड्स जैसी बीमारी से जीत पाया है । यह देश की प्रमुख फार्मा और बायोटेक्नालॉजी कम्पनी है ।
- **अदाणी मोटर्स**– 1789 करोड रूपए जोड मार्केट कैप में । इस कंपनी की खास बात यह हे कि उद्योगपति गौतम अदाणी की ये कंपनी देश के छः राज्यों में 10 पोर्ट ऑपरेट कर रही है । 2019–20 में रेवेन्यू 13,734,42 करोड रूप्ए और मुनाफा 3,78,892 करोड रूपये रहा ।

- **हीरो मोटाकार्य लिमिटेड**–17541 करोड जोडे अपने मार्केट कैप में इस कंपनी की खास बात यह है कि एशिया अफ्रीका, यूरोप और दक्षिण अमेरिका के 37 देशों में बिकती हे कंपनी का बाइक्स एवं स्कूटर।
- **ल्यूपिन लिमिटेड**– 15693 करोड जोडे अपनेमार्केट कैप में। इस कंपनी की खास बात यह है कि ये कंपनी के भारत के अलावा अमेरिका जापन, ब्राजील और मैक्सिकों में भी बडे दवा मैन्यूफैक्चरिक प्लांट है।
- **वेदांता लिमिटेड**– 15631 करोड जोउे अपने मार्केट कैप में। इस कंपनी की खास बात यह है कि कंम्पनी जल्द ही अपने शेयर का भारतीय शेयर बाजार से डीलिस्ट कराने वाली है नई विस्तार योजना पर काम जारी है।
- **पिरामल एंटर प्राइजेज**– 15357 करो जोडे अपने मार्केट कैप में। इस कम्पनी की खास बात यह है कि इस कम्पनी के चेयरमैन अजय पिरामल लियंस इंस्ट्रीज के चेयरमैन मुकेश अंबानी के समधी भी है।
- **बायोकॉन लिमिटेड**– 14172 करो जोडे अपने माकैट कैप में। इस कंपनी की खास बात यह है किइस कम्पनी की एक दवा को कोविड 19 में इमर्जेसी उपयोग की अनुमति मिली है और इस दवा का विदेशों में भी विस्तार है।
- **भारतीय इन्फ्राटेल**–13650 करोड जोडे अपने मार्केट कैप में। इस कम्पनी की खास बात यह है कि यह कम्पनी भारती एयरटेल की सबसे बडी मोबाईल टॉवर कम्पनियों में एक है। इस कम्पनी का तेजी से कारोबार बढ रहा है।
- **हिंडाल्को इंडस्ट्रीज–** 11557 करोड जोडे अपने मार्केट कैप में। इस कम्पनी की खास बात यह है कि यह कम्पनी आदित्य बिडला समूह की ये कम्पनी दुनिया की सबसे बढी एल्यूमिनियम रोलिंग करने वाली कंपनी है।
- **इन्फोएज इंडिया लिमिटेड**– 11328 करोड जोडे अपने मार्केट कैप में । इस कंपनी की खास बात यह है कि यह कंपनी नौकरी डॉट काम जीवन साथी डॉट कॉक 99 एकड डॉट काम आदि का संचालन करती है।
- **मदरसन सूमी सिस्टम** – 10720 करोड जोडे अपने मार्केट कैप में । इस कंपनी की खास बात यह है कि यह कंपनी एश्या,यूरोप,उत्तरी दक्षिणी अमेरिका आस्ट्रेलिया में इलेक्ट्रिक उपकरण सप्लाई करती है।
- **आयशर मोटर्स–** 10436 करोड जोड अपने मार्केट कैप में इस कम्पनी की खास बात यह है कि इस कम्पनी ने रायल इनफील्ड बाइक्स बुलेट को भारत के अलावा भी कई देशों मं पापुलर बनाने में सफलता हासिल की है।

जिसमें प्रोफेशनल हो और वे भारतीय चुनौतियों के अनसार देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए चरण्बद्ध तरीके से नीतिगत समाधान सरकार के सामने रखे। अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्था आई एम एफ ने एक टास्क फोर्स का गठन किया है इस टास्क फोर्स का

उद्देश्य है कि बिगडती हुयी अर्थव्यवस्था को कैसे पटरी पर लाया जाये इस टास्क फोर्स में आर.बी. आई. के पूर्व गवर्नर रघुराम राजन भी है रघुराम राजन पहले भी आई एम एफ के साथ रह चुके है और वे एक काबिल अर्थ विशेषज्ञ है भारत को भी चाहिए कि अर्थव्यवस्था को संभालने के लिए भारत में भी प्रतिभाशाली अर्थशास्त्रीयों की एक कमेटी का गठन किया जाए, जिसमें प्रोफेशनल हो और वे भारतीय चुनौतियों के अनुसार देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाने के लिए चरणबद्ध तरीके से नीतिगत समाधान सरकार के सामने रखे पिछले साल के ही आर्थिकी सूचकांक को देखे तो आटोमोबाइल सेक्टर, रियल स्टेट, लघु उद्योग समेत तमाम असंगठित क्षेत्र में सुस्ती छाई हुई थी। बैक एन पी ए की समस्या से अब तक निपट रही है हालांकि सरकार निवेश के जरिए, नियमों में राहत और आर्थिक मदद देकर अर्थव्यवस्था को रफतार देने की कोशिश कर रही थी पर बहुत अधिक सफलता सरकार को नहीं मिली है। इस बीच कोरोना वायरस के कारण पैदा हुए हालात ने जैसे अर्थव्यवस्था का चक्का जाम कर दिया है न तो कही उत्पादन है और न मॉगे, लोग घरों में है और कारखानों तथा दुकानों में ताले लगे हुए थे यह स्थिति 03 मई 2020 तक रही थी। कोरोना से लडाई अब दोहरी है। ज्यादातर देश सेहत और अर्थव्यवस्था दोनों का विनाश सीमित करने में जुटे है। भारत में संक्रमण रोकने के प्रयास जोर पकड रहे है लेकिन आर्थिक राहत में भारत पिछड गया है। इधर भारत में अब सबसे बडी चिंता इसलिए है कि भारत में अब कोरोना मरीज बढते की रफ्तार

दुनिया में सबसे तेज है यू एस से दोगुनी भारत में इस महीने मरीज 3.6 प्रतिशत की दर से बढे, अमरिका में 1.8 प्रतिशत की दर से यही रफ्तार रही तो 8 अगस्त तक देश में 22 लाख मरीज हो सकते है। भारत में नए कोरोना मरीज मिलने की रोजाना औसत दर 3.6 प्रतिशत हो गई है जो दुनिया में सबसे ज्यादा है। यानी भारत में अब नए मरीज सबसे तेज रफ्तार से बढने लगे है। सबसे ज्यादा 39 लाखा मरीजो वो अमेरिका में यह दर भारत से आधी 1.8 प्रतिशत बनी हुई है।

कोविड–19 संकट आने के पहले भारतीय अर्थव्यवस्था नॉमिनल जी.डी.पी. के 11 साल के न्यूनतम स्तर पर भी बेरोजगारी की दर पिछले 45 साल मे सबसे अधिक थी और ग्रामीण मांग पिछले 40 साल के सबसे न्यूनतम स्तर पर भी इसलिए बेहतर यह होग कि जारी आर्थिक संकट को समझने के लिए पिछले दो वर्ष से चल रहे आर्थिक संकट को भी ध्यान में

लिया जाये तब जाकर कही कोविड–19 संकट के बाद भारतीय अर्थवरूव्स्था को दोबारा तेजी से आगे बढाने के लिए एक मजबूत नीति का निर्माण हो सकता है। वर्तमान की बात करें तो भारतीय अर्थव्यवस्था एक हरे संकट की तरफ बढ रही है। विभिन्न प्रतिष्ठित अंन्तरर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने भारत की आर्थिक वृद्धि दर के संन्दर्भ में जो ऑकडे जारी किए है वे चिंताजनक है। वर्ल्ड बैंक ने दो संभावनाऍ जताई है पहली संभावना यह है कि अगर भारत सही वक्त पर सही तरीके से इसे कंट्रोल करने में कामयाब रहा तो अर्थव्यवस्था में जी.डी.पी. मे वृद्धि दर 4 फीसदी रहेगी।
यदि रोजगार पर दृष्टि डाले तो लॉकडाउन की वजह से कुल 12 करोड नौकरिया चली गई है। कोरोना संकट से पहले भारत मे कुल रोजगार आबादी की संख्या 40.4 करोड थी जो इस संकट के बाद घटकर
28.5 करोड हो चुकी है।

निष्कर्ष–

कोविड–19 के संकट का अभी सबसे बुरा दौर आना बाकी है यानी कि आज यह निष्कर्ष निकालना कठिन है कि अर्थव्यवस्था का सबसे बुरा दौर क्या होने वाला है हम अभी सिर्फ सम्भावनाऍ जता सकते है लेकिन यह जरूर स्पष्ट होता जा रहा है कि अर्थव्यवस्था में मॉग एक पूर्ति के साथ–साथ बेरोजगारी का भीषण संकट आ रहा है। प्रधानमंत्री मोदी जी के शब्दों में कहे तो हमें जान और जहान दोनो को बचाना है लेकिन साथ ही
अपने लोगों की जीविका को भी बचाने के लिए आर्थिक रूप से कुछ बडे फैसले लेने होगें।

संन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. भारतीय अर्थवयवस्था, डॉ0 शर्मा एवं सिंह
2. भारतीय अर्थव्यवस्था, रूद्र एवं सुन्दरम एस.चॉन्द पब्लिकेशन दिल्ली
3. भारतीय अर्थव्यवस्था एस.एन अग्रवाल साहित्य भवन आगरा
4. भारतीय अर्थव्यवस्था मिश्र एवं पूरी पब्लिकेशन मुम्बई
5. भारतीय राज्य व्यवस्था नरेन्द्र मदान, अष्टम प्रकाशन प्रथम संस्करण 1996
6. भारतीय अर्थव्यवस्था, मिश्र एवं पूरी हिमालय पब्लिकेशन दिल्ली
7. vikipedia.org
8. दैनिक समाचार पत्र एवं पत्रिका